धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

फरवरी - 2013

महोत्सव मुबारक की रिर्पोट

महोत्सव पर दान की मोटी मोटी रक्में

श्रीमान बलेदव सिंह जी और परिवार	1,00000
श्रीमान डाक्टर विनोद जी खेड़ा	25,000
श्रीामन जगजीत सिंह जी लुधियाना	2100
श्रीमती कमलेश जी विशष्ट	2100
श्री सुधीर जी (बेटे श्रीमान धर्मवीर जी प्रिंसीपल)	2100
श्रीमती अमरजीत बराड़ (पुत्रवधु श्रीमान हरनाम सिंह जी मलके)	2000
ब्रिगेडियर सिधू साहिब (जगबीर सिंह जी) जोधपुर	2000
श्रीमती शशी जी खेड़ा	1950
मुनीश जी अमरीका	1500
प्रेमबाला जी खोसा	1200
जगीर सिंह जी केसूपर	1100
श्री सुभाष जी अग्रवाल	1100
श्रीमती सरोज जी बलटाना	1100
श्री नितिन जी बांसल चण्डीगढ़	1100
श्रीमति सरोज जी कुक्कड़	1000
डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों	1000
श्री सुखदेव जी गोनियाना	1000
श्रीमान सत्यावान जी डोगरा	900
श्री रशपाल जी थराजवाला	500
श्रीमान बलदेव सिंह जी थराजवाला	500
श्रीमान इकबाल सिंह थराजवाला	500
श्री विनोद जी डोगरा धर्मशाला (कांगड़ा)	500
श्री दविन्द्र जी	500
श्रीमतीर आशा रानीजी	500
श्रीमान प्रेम सिंह जी बन्नी (सिरसा)	500
श्रीमान अजीत सिंह मल्लेका (सिरसा)	500
श्रीमान ज्ञान सिंह जी मौजदीन (सिरसा)	500
श्रीमान तेज सिंह जी थराजवाला (सिरसा)	500
श्रीामन गोपीचन्द जी बन्नी (सिरसा)	500
श्री जे. एस. भुल्लर	500
श्री वरिन्द्र जी डोगरा (योल कांगड़ा)	500
श्री ओम प्रकाश वर्मा	500

100 - 100 - 200 - 200 रू० अलग दान हुआ, कुल दान 1,60,000 से कुछ ऊपर हो गया। नियत दान 21850 रू० धर्म जीवन 3050 रू०, हितस्त्रोत 2200 रू०।

यदि ग़ल्ती से किसी का नाम रह गया हो तो क्षमा करना।

धर्म जीवन

खण्ड 26 अंक 2

फरवरी – 2013

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परम पू० भगवान देवात्मा जी का 162वां शुभ जन्म महोत्सव

परम पू० भगवान देवात्मा जी का 162 वां पावन जन्म महोत्सव 27 दिसम्बर वीरवार से 30 दिसम्बर ईतवार तक ब्राह्मण धर्म शाला सैक्टर 37 सी, चण्डीगढ़ में हर वर्ष की तरह, इस वर्ष भी पूरे चाव भाव से मनाया गया।

इस पावन शुभ अवसर की सफलता के लिए तैय्यारियां और संग्राम किया गया। श्रीमान बलेदव सिंह जी ने, अपने साथी, बहुत सम्मान के योग्य श्रीमान बलबहादुर सिंह जी को अकसर अपने साथ लेकर, श्री अकबरपुर की यात्रा के बाद बहुत सारे सम्भव स्थानों का दौरा किया। हितकर सभाएं कराने के ईलावा, सब स्थानों पर महोत्सव मुबारक पर पहुंच कर लाभ उठाने के लिए पुरज़ोर प्रेरणा करते रहे।

सामाजिक दोनों पत्रिकाओं में महोत्सव मुबारक सम्बन्धी नोट छापने के साथ, महोत्सव के शुभ अवसर पर पहुंचने और अन्य अधिकारी जनों को तैय्यार करके, अपने साथ लाने, इस प्रकार सच्चे पुण्य के भागी बनने के लिए पुरजोर अपीलें छापी गई। फोन पर बहुत सारे साथियों के साथ सम्पर्क करके बार बार प्रोग्राम बताने की और महोत्सव मुबारक पर पहुंचने की पुर जोर प्रार्थना की जाती रही।"हित स्त्रोत" और "धर्म जीवन अंक छापकर पोस्ट किए गए। इन पत्रिकाओं द्वारा भी महोत्सव मुबारक का शुभ संवाद पाठकों तक पहुंचाया गया। हमेशा की तरह बहुत सुन्दर निमन्त्रण पत्र छापे गए, और अच्छी संख्या में भेजे गए और पोस्ट किए गए।

इस मुबारक अवसर के लिए कुछ नई पुस्तकें भी छापी गई। खेड़ा इन्सटिच्यूट द्वारा बच्चों के गानों सम्बन्धी इस अवसर के लिए कोई महीना भर तैय्यारियां की गई।

सन्मान के योग्य सुशील जी के देहान्त के कारण हमें महोत्सव सम्बन्धी प्रोग्रामों को मनाने के लिए, नए स्थान की सख़्त ज़रूरत थी। प्रबन्धकों को इसका बहुत फिकर था। परन्तु उक्त ब्राह्मण धर्मशाला के माननिय प्रबन्ध, विशेषकर श्री प्रधान जी और मैनेजर साहिब ने बहुत उदारता से हमें अपना स्थान प्रयोग करने की अनुमति दे दी, जिसके लिए गुरू मिशन उन्हें जितना भी धन्यवाद दे थोड़ा है।

इस शुभ महोत्सव की सभाएं और दूसरे प्रोग्राम मनाने के लिए, पहले की तरह हाल को अन्दर से

तैय्यार किया गया। बहुत सारे देव बाणी के Motto बहुत ही सुन्दर ढंग से हाल के अन्दर सजाए गए। हाजरीन के बैठने के लिए दरियां, मैटस और ऊपर सफेद चादरों का प्रबन्ध किया गया। सैंक़डो कुर्सीयां बिछाई गई। परलोकवासी उच्च धर्म सम्बन्धियों की फोटोज़ को ठीक स्थान पर रखा गया।

किताबों की स्टाल के लिए स्थान बनाया गया। बड़ी स्टेज पर गुरू महाराज की बहुत बड़े साईज की छवि की स्थापना करने का सुन्दर प्रबन्ध किया गया। उसे वा उसके इर्द गिर्द उचित सजावट की गई। इस सारी सफाई और सजावट के संग्राम कारण सभा हाल बहुत सुन्दर शोभा दे रहा था। बड़े अच्छे प्रभाव पड़ रहे थे। यह सारा संग्राम श्रीमान जगदीष जी और उनके बच्चों ने खुशी खुशी सदा की तरह करके तृप्ति पाई। सुन्दर गेंदे के फूलों से लदे गमले वा गलदाऊदी अलग शोभा दे रही थी। सेहन में झण्डे शोभा दे रहे थे। गुरू महाराज का विजय पताका ऊपर सुशोभित किया गया ताकि उसका लहराना संसार अंदर आने वाले देव राज का ऐलान कर सके। इसके भी बहुत सुन्दर प्रभाव पड़ रहे थे।

इस सारे संग्राम में श्रीमान जगदीष जी के साथ मधू सूदन जी वा प्रदीप जी ने भी कितने कामों में बहुत सहायता की। हमेशा की तरह बैंड का भी प्रबन्ध किया गया।

सारी धर्मशाला काफी सुन्दर और साफ सुथरी है। कई प्रकार की सजावट यहां आसान रही। पानी का टैंकर भी जरूरत अनुसार पहले ही रख लिया था, ताकि पानी की बेफिक़री रहे।

चण्डीगढ़ के लोकल हिन्दी वा अंग्रेजी अख़बारों के अन्दर प्रोग्राम छपवाने वा देने का काम हमेशा की तरह डाक्टर खेड़ा साहिब बहुत उत्साह के साथ करते रहे।

यात्री साहिबान के स्नान आदि के लिए गर्म पानी का प्रबन्ध ज़रूरत के अनुसार किया गया। यह सेवा मधू सूदन जी और श्री बूटा सिंह जी कल्याण खुशी खुशी बहुत संग्राम के साथ करते रहे।

श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा यमुना नगर ने किताबों की स्टाल की ज़िम्मेवारी हर साल की तरह सम्भाली।

दफतर का काम श्रीमान जगदीष जी और उनके बेटे विनय जी ने सम्भाला। अपने Tempo के द्वारा चीजे, राशन, लकड़ी सब्जी आदि ढोने का काम भी करते रहे।

हररोज अर्चन के लिए फूलों का प्रबन्ध पहले की तरह जगदीष जी करते रहे।

श्रीमान गुरूदेव राज जी केसूपुरा (हरियाणा) विशेष दिन की सुबह कीर्तन में अपनी पार्टी और अन्य जनों समेत बहुत श्रद्धा और उत्साह के साथ भजनों का गान करते रहे।

बच्चों की सभा श्रीमती सुरजीत जी बराड़ और उनके साथ सरोज जी और कमलेश जी मिलकर conduct करते रहे और ईनाम आदि वितरण करते रहे। खेड़ा साहिब की संस्था के बच्चों ने भजनों का सुन्दर प्रोग्राम किया। 29 दिसम्बर जो गुरू का जन्म का दिन था, इन सब बच्चों का प्रोग्राम आकर्षण का केंदर था।

खाने का प्रबन्ध भी पहले की तरह ठीक चलता रहा। कैंटीन का प्रबन्ध भी सन्तोष जनक था

नीचे लिखे प्रान्तों से अच्छी गिणती मे यात्री साहिबान आए:- पंजाब, हरियाणा, लंडन, दिल्ली,

राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, यू०पी० उतरांचल और बिहार आदि। यात्रीयों के आने वाले स्थान इस प्रकार थे:- दिल्ली, कल्याण (भटिंडा) लंडन, अम्बाला, करनाल, बनी, चण्डीगढ़, मोहाली, पंचकूला, दड़वा, बलटाना, ज़ीरकपुर, मेरठ, लुधियाना, समराला, मोदीपुरम, देहरादून, मंडवाड़ी (मेरठ) रनीयां, मौजदीन, कोटली, गुरूसर, गिदडांवाली, रत्ता खेड़ा, गज सिंह पुर, पदमपुर, गंगानगर, भटिंडा, मानसा, गोनियाना मंडी, महिमा सवाई, संगरूर, यमुनानगर थराजवाला, बुंगी आदि से। लोकल आने वाले जनों समेत हाजरी 200-250 में रही। विशेष दिन पर सैंकड़े की गिणती में कोंचिंग सैंटर के बच्चों ने लैक्चर attend किया। कईयों ने भजनों में भाग लिया।

महोत्सव की सब सभाएं बहुत प्रभावशाली थी। अच्छा सुन्दर मण्डल पैदा होता रहा। सभाओं की संक्षेप रिर्पोट इस प्रकार है:-

27.12.2012

(महोत्सव की प्रवेश सभा)

समय: शाम 5 बजे

सभापति- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

5 बजे श्रीमान सुनील दत्त जी ने प्रवेश सभा का घण्टा बजने के बाद, उच्च जोश वा श्रद्धा से भरकर "हमारे पू० सत्गुरू जी तुम हो धन्य, तुम हो धन्य" नामक सुन्दर भजन उच्च सुर में अलापना शुरू किया। हाजरीन भी साथ आकर जुडते रहे और भजन के साथ योग देने लग गए। महोत्सव का पाक वातावरण भी बनना शुरू हो गया। इसके बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी वा जगदीष जी ने गुरू महाराज की भव्य छवि का सुन्दर बड़े हार द्वारा अर्चन किया। सब हाजरीन ने खड़े होकर उच्च स्वर में पावन देव स्तोत्र का गान किया। इसके बाद सभापति जी ने हृदय के गहरे भावों से देव स्तोत्र की व्याख्या की। सब हाजरीन के, जो अच्छी संख्या में जुड़ चुके थे, बैठने के उपरान्त सभापति जी ने गुरू महाराज के श्री चरणों का ध्यान धर कर सभा की सफलता और देव प्रभावों की प्राप्ति के लिए अति विनम्र होकर बहुत सुन्दर प्रार्थना की, जिससे मण्डल और भी प्रभावदायक बन गया। इस प्रकार लगता था कि बड़े सुन्दर, विशाल हाल पर, जो बड़ी मेहनत से सजाया गया था, सहायकारी शक्तियों की विशेष सहायता की बारिश हो रही है। बहुत उच्च महौल बनता महसूस हो रहा था।

दूसरा भजन फिर दत्त साहिब ने "जीवन ज्योति के तुम सूरज, अन्धेरा दूर करते हो" नामक बहुत सुन्दर सुर और आवाज़ से भावों से भर कर गाया, श्रद्धा से भरकर बाकी हाजरीन भी साथ गाते रहे। फिर सभापति जी ने अपना ब्यान शुरू करते हुए कहा:-

देव आत्मा धर्म के सूर्य्य का पावन जन्म दिन हमारे पतित और नीच भारत में मनाया जा रहा है। यह एक अचम्भे की बात है। हम इस क़दर नीच और पिशाच भारतवासी हैं, जो बड़ी शर्म की बात है। जैसे भयानक घटनाओं का दौर चलता है, हृदय शर्म के साथ झुक कर पानी पानी हो जाता है।

अभी हम प्रसिद्ध महाजन भाईयों की दुखदाई घटना नहीं भूल पाए कि पौंटी चड्डा और उसके भाई की आपस में लड़कर मौत हो गई।

अभी फरीदकोट की कान्वैन्ट स्कूल की 14 वर्षीय विद्यार्थी के अपहरण का किस्सा भूल नहीं पाए थे कि अब दिल्ली की लड़की के भयानक गैंग रेप की

घटना ने सारा देश ही कंपा दिया। अखबारों से पता लगता है कि रेप की घटनाओं के तांते ही लग रहे हैं। हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में पाप की गंगा बहती है, मिथ्या की गंगा बहती है।

ऐसे नारकी घटनाओं से भरे देश में हमारा जन्म हुआ, हम वहशी हैं। इन्सान कहलाने के हक़दार नहीं। ऐसे देश के पापी वातावरण के अन्दर हम जो पापों से बचे हुए हैं, मिथ्या से बच रहे हैं, यह सब परम पू० भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का चमत्कार है। मैं बल्लियों उछलने लगता हूं, यह सामने लाकर कि मुझे अद्वितीय सत्गुरू की देव संगत प्राप्त है। आपके प्रभाव हिलाते हैं, महसूस होने लगता है कि इन्सान ऐसा होना चाहिए। भाई, बेटा, पति ऐसे होने चाहिए। आपके प्रभावों में आकर अनुभव होता है कि जैसी दुनियां हमें बनानी चाहिए, वैसी दुनियां आप बनाते हो।

जैसी नारकिय हालत हमारे देश की है, वहां देवात्मा जी का जन्म होना और उनका शुभ जन्म महोत्सव मनाना सब अश्चर्य्य की बात है।

आप सब का ऐसे शुभ अवसर पर आना, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, दूर दूर से पधारना बहुत मुबारक है। बहुत खुशी और गौरव की बात है। आप सबको देव धर्म मिशन की ओर से खड़े होकर खुश - आमदीद, welcome, जी आयां कहता हूं, सिर मत्थे पर बिठाता हूं। धन्यवादी हूं ऐसी सर्दी, धुन्ध में कष्ट उठाकर आना बहुत बहुत मुबारक।

स्वागत के बाद सभापति जी ने कहा कि हम जन्म दिन मनाने आए हैं या यहां कोई और भी काम है।

बताया गया कि खास काम देव प्रभाव पाने का है। देव प्रभाव देव ज्योति और देव तेज की किरणों को कहते हैं। देव ज्योति केवल सत्य और शुभ के अनुरागों से पैदा होती है, यह ज्योति ऐसे प्रभाव का नाम है, जिसमें हमारा ध्यान हमारी अपनी ओर जाता है। हमें अपनी नीच हालत नज़र आती है। अपनी असल औकात का पता लगता है। देव तेज भी ऐसी शक्ति का नाम है जो देवात्मा जी के देव जीवन से निकलती है, जो हमारी नीचता का, हमारी योग्यता अनुसार नाश करती है। किसी प्रकार स्वामी गोबिन्द राम जी, न चाहकर भी एक बार इन प्रभावों में आ गए, वह मलीन, कामी, नीच और दुर्बल जीवन से बच गए, फिर अपना जीवन ही भेंट कर दिया, जैसे लेज़र द्वारा आंखों आदि का अप्रेशन किया जाता है, गुरू महाराज की ज्योति और तेज की रेज़ हमारी नीचता का अप्रेशन कर देती हैं। कनूनगो को यह रेज़ मिली, सदा के लिए रिश्वत के घिनौने काम से बच गए।

हम दुर्बल, मलीन और अन्धी आत्माओं के लिए देवात्मा एक मात्र आशा के जहाज हैं।

मेरे महा सौभाग्य हैं कि उनकी नायाब शरण में आकर कितने पक्षों में मेरा बेहद भला हुआ है। इतना भला हुआ है कि मैं बताने में असमर्थ्य हूं।

हम सुखों के अनुरागी मनुष्य पागल हैं। हम वह काम करते हैं, जिसमें मौत और दुख है। जैसे चूहे पिंजरे में गुड़ रोटी के लिए फंस जाते हैं, उसी प्रकार हम दौले शाह के चूहे सुखों में फंसकर अपना नाश करते हैं। धन के पीछे जाकर, काम वासना के पीछे जाकर, पदवी के पीछे, मान बड़ाई , प्रशंसा के पीछे जाकर बर्बाद होते हैं। एक जज ने काम वासना के पीछे जाकर एक डाक्टर का कतल कर दिया। एक रिश्वत खोर मरता है, तो दूसरा लेने लगता है। हमारा लक्ष्य धन नहीं, वासनाओं की तृप्ति नहीं, इस जीवन

को जानना है, इस जीवन को बचाना है। इस जीवन को आगे बढ़ाना है, इसलिए सारा संसार देव प्रभावों पर निर्भर करता है।

मैं इसलिए पागल हूं कि जिन माता पिता से जन्म लिया, मैं उन अपने जन्म दाता को, कुर्बान होने वालों को, प्यार करने और निस्सार होने वालों को तुच्छ ही समझता था। उनके गुण वा महानता दिखाई नहीं देती थी। गुरू ने मेरी मन की आखों का अप्रेशन कर दिया। माता पिता प्यार की मूर्ति, कुर्बानी वा त्याग की मुर्ति नज़र आने लग पड़े। यह लेज़र रेज़ केवल देवात्मा से ही प्राप्त हो सकती हैं।

हम अपने आपको सबसे बढ़िया, सुन्दर वा महान समझते हैं। हमारे जैसा कोई नहीं दूसरों को कुछ नहीं समझते। भगवान की ज्योति के अन्दर हमें अपनी नीच गतियां नज़र आती हैं। मैं अपनी पत्नी को तुच्छ समझता था। रोशनी मिली तो नज़र आया कि मैं अपनी पत्नी के लिए क्या करता हूं, जबकि वह, मेरे लिए बेशुमार काम करती हैं। 20 वर्ष से हमेशा 'जी' कहकर बुलाता हूं, ऊंचा नहीं बोलता, दरिंदा जीवन से निकला हूं।

"बचा दिया ओ गुरूया, तुच्छ जन बचा दिए।" यह पुकारता हूं। देवरूप हमारी सर्व्वोच्च भलाई का केंदर है, ज्यों ज्यों मानवता देवरूप को पहचानेगी, त्यों त्यों इस दर पर आएगी। हमें जिनको सिर पर रखना चाहिए, उनको पैरों में रोलते हैं और जिन्हें तिलांजली देनी चाहिए, उनको सिर पर चढ़ाते हैं।

श्रीमान प्रेम जी बनी ने अपनी पत्नी को कहा था कि इन बूढ़े माता पिता को अधिक से अधिक तंग करना है। हित के सागर की किरणें मिली तो अपना आप ग़ल्त नज़र आ गया। कहते हैं कि मेरे अपने रिश्तेदार 10 किलो आटा उधार नहीं देते थे, अब गुरू की कृपा से लोग हज़ारों, लाखों दे जाते हैं।

अज़ब नहीं अकसीर तुम्हारी, खाक को चाहे ज़र कर दे, फरशे ज़मी से हमको उठाकर, अर्श में जलवागर कर दे।

इसके बाद सभापति जी ने नियम बताए, जो इन दिनों में पूरे करने हैं:-

कल से सब सेवकों ने एकाकारी पहनकर आनी है, सेवा करनी है, निन्दा नहीं करनी, गुरू के उपकार याद करने हैं, दीन हीन बनकर शुभ कामना करनी चाहिए।

नियतदान, चन्दा अख़बार आदि देने हैं।

इसके बाद मन्त्री देव धर्म ने अद्वितीय वातावरण की कुछ महिमा का ब्यान किया।

फिर ज़रूरी सूचनाएं वा डियूटीज़ सुनाई गई। इसके बाद अगले दिन का प्रोग्राम बताया गया। सभा के बाद खाने और बिस्तरों का प्रबन्ध किया गया।

28.12.2012, सुबह 9 बजे:- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:-भजन के गान के बाद सुन्दर हार द्वारा पू० भगवान के श्री चरणों में आर्शीवाद प्रार्थना की, फिर "परम अवश्यक जीवन दायक मेरे भगवन का सम्बन्ध" नामक भजन का जगदीष जी ने भावों से भरकर गान किया।

सभा में बताया गया कि हमारे जीवन में हमारी विरासत वा वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान है। हम विरासत अपनी मर्ज़ी से ग्रहण नहीं कर सकते, यह हमारे जन्म लेने से पहले ही genes के रूप में हम ग्रहण कर लेते हैं। शारीरिक, मान्सिक, हार्दिक गुणों वा अवगुणों की पूंजी हमें माता पिता द्वारा प्राप्त हो जाती है, इसमें कोई तबदीली नहीं हो सकती। आज तक

सांईस ने कोई ऐसी खोज नहीं की कि वह विरासत अर्थात genes को बदलकर मनुष्य के स्वभाव को बदल सके। दूसरा है वातावरण, इसमें मनुष्य चुनाव कर सकता है। प्रत्येक अस्तित्व जिससे मनुष्य का सम्बन्ध बनता है, उसको अच्छे वा बुरे रूप में प्रभावित करता है। परम पू० भगवान देवात्मा का सम्बन्ध, उनके तपस्वी प्रचारकों का सम्बन्ध, सत्संग, साहित्य द्वारा हमारे साथ बनता है। बाकी सब दुनियां के सम्बन्धी हमारी मूल वस्तु आत्मा के सम्बन्ध में अबोधी वा अज्ञानी हैं। केवल पू० भगवान के सम्बन्ध द्वारा ही हमें जीवन का भीतर से ज्ञान होता है, अपनी तबाही से बचने की अवश्यकता अनुभव होती है। हमारे जो 2 भाव इस जीवन को पतित करते हैं, उसकी हानि करते हैं, उसकी भयानकता का सच्चा ज्ञान केवल देवात्मा ही अता करते हैं। श्रीमान जगदीष जी की और अपनी तबदीली का कुछ प्रभाव दायक ब्यान करके बताया कि इस सम्बन्ध द्वारा कितनी जीवनदायक बरकतें नसीब हुई हैं। सरदार हरनाम सिंह जी की इन्कलाबी तबदीली का वर्णन किया। एक और धर्म सम्बन्धी के जीवन का भावपूर्ण ब्यान किया जिन्होंने अपने विरोधी की सेवा में बहुत बड़ी राशी गुप्त रूप से अदा की। श्रद्धेय काका जी को जो परोपकारी जीवन देवात्मा के सम्बन्ध द्वारा प्राप्त हुआ उसका पुर असर ब्यान किया। इसी प्रकार श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के जीवन की उस खूबसूरत घटना का भावों से भरकर ब्यान कया जब उन्हें उस व्यक्ति के प्रति दुख पहुंचा कि अब वह मुझसे लाभ उठाने से वंचित रह जाएगा क्योंकि अपनी घृणा से मजबूर होकर वह पत्थर मार बैठा था। हम अनुमान नहीं लगा सकते कि इस सम्बन्ध से हमें क्या 2 योग्यताएं प्राप्त होती हैं।

इस ब्यान के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि हमें नहीं पता कि कहां मेरी भलाई है, कहां मेरी तबाही है। जीवन का यह भेद खुलना इस सम्बन्ध के बिना असम्भव है। क्योंकि आत्मा का भेद देवात्मा की देव ज्योति के बिना नहीं खुलता, न नीच भावों से मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा पैदा होती है, न कोई संग्राम शुरू होता है। हमें सात्विक भावों की अवश्यकता भी परम पू० भगवान देवात्मा का सम्बन्ध ही पैदा करता है। उच्च भाव पैदा करने का संग्राम भी देवात्मा ही पैदा करते हैं। उनके सम्बन्ध द्वारा ही यह सम्बन्ध सब सम्बन्धों से बढ़कर बन जाता है।

इसके बाद शाम के प्रोग्राम अर्थात लैक्चर के विषय में बताया गया और चार बार जय ध्वनि के साथ यह प्रभावदायक सभा समाप्त हुई।

28.12.2012 शाम 4.30 बजे

पब्लिक लैक्चर

वक्ता: प्रिंसीपल मिसिज़ सुरजीत बराड़

विषय: देव समाज की संस्कृति अर्थात कल्चर (culture)

इस लैक्चर के सभापति डाक्टर विनोद जी खेड़ा थे। उन्होंने पहले वक्ता का बड़े सुन्दर शब्दों में परिचय करवाया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार मिसिज सुरजीत बराड़ ने 31 वर्षों तक प्रिंसीपलशिप में शानदार रिज़लट दिखाए नीति शिक्षा के द्वारा बच्चों को नैतिकता सिखाई, कैसे श्रीमान बलदेव सिंह जी का इस मिशन में साथ दिया और प्रबन्ध की शानदार योग्यता रखती हैं आदि। फिर मिसिज बराड़ ने अपना लैक्चर शुरू किया कि कल्चर का अर्थ है विचार, व्यवहार, रीति रिवाज, धार्मिक विचार आदि। देव धर्म ने शानदार कल्चर को जन्म दिया है। देव धर्म की कल्चर

को हम चार भागों में बांट सकते हैं। सामाजिक कल्चर, बौद्धक कल्चर, नैतिक कल्चर और अध्यात्मिक कल्चर।

सामाजिक कल्चर के विषय में उन्होंने बताया कि 18 - 19 वीं सदी में हिन्दु समाज में बहुत बुराईयां फैली हुई थी, यह अन्धकार मय युग था, जिसमें गुरू महाराज का जन्म हुआ, उनमें जन्म काल से सुधारवादी प्रकृति प्रबल रूप से आई थी। उन्होंने बचपन में गहने न पहनकर, अपनी भतीजी और भावजा को पढ़ाकर, आगे शिक्षा प्राप्ति के लिए संग्राम करके वा छूतछात को ख़त्म करके इसका परिचय दिया था। फिर देव समाज की स्थापना करके बाल विवाह की रसम तोड़ी, विधवा विवाह प्रचलित किया। छूतछात, जातिपाति, दहेज आदि की रसमें ख़त्म करके, उपयोगी रसमें शुरू की। इसका ही नतीजा था कि कनल जी ने न केवल जाति के बन्धन को तोड़ा बल्कि तारा डूबने पर शादी की और विवाह सफल रहा।

बौद्धक कलचर में उन्होंने बताया कि देव ध र्मी की परवरिश विज्ञान मूलक वातावरण में होती है। यह मिथ्या विश्वास कि कर्मो की सज़ा परमात्मा देता है, वा पाप कहीं डुबकी लगाने से, या विशेष तीर्थ पर जाने से, या मन्त्र पढ़ने से क्षमा हो जाते हैं, देव धर्मी नहीं मानता, यदि ऐसा होता तो किसी कचहरी वा कानून की अवश्यकता नहीं थी। यह सब नेचर के नियमों के विरूद्ध है। देव धर्मी नेचर के अटल नियमों को मानता है। नियमों के द्वारा परिवर्तन को मानता है। विकास के नियम को मानता है। मौत के बाद ज़िन्दगी को मानता है।

नैतिक कलचर का सम्बन्ध व्यवहारों से है। देव धर्म मास भक्षण न करके पशुओं के प्रति संवेदना प्रगट करता है, नशे की प्रतिज्ञा करके स्वंय के अस्तित्व को सुरक्षित करता है। पत्नी के जीवित होते दूसरी शादी न करवाकर पति पत्नी के सम्बन्ध को सुरक्षित करता हैं रिश्वत न लेकर, न दबाकर दूसरों के हक़ों को सुरक्षित करता है।

देव धर्म में व्यवहारों को परिवर्तित करने की कल्चर है, किस प्रकार सैंकड़े लोगों ने पाप छोड़ें, मिथ्या छोड़ी, सम्बन्धों में स्वर्ग आया, उसकी उदाहरणों द्वारा व्याख़्या की।

देव धर्म में परिशोध की कल्चर है, किस प्रकार लोगों ने रिश्वतें वापिस की, बुरे व्यवहारों के लिए क्षमा मांगी, उदाहरण द्वारा व्याख़्या की। अध्यात्मिक कलचर को परमात्मा के साथ जोड़ते है, परन्तु देव धर्म हमें चारों जगतों से जोड़ता है। चारों जगतों का उपकारी रूप नज़र आता है, उसके लिए सेवा के साधन बताए जाते हैं।

अध्यात्मिक बनने के लिए आत्मा का ज्ञान अवश्यक है आत्मा क्या है, उसकी शक्तियां क्या है। उच्च वा सात्विक भाव कैसे आत्मा का विकास करते है, इसका बहुत सुन्दर उदाहरणों द्वारा वर्णन किया।

यह लैक्चर बहुत ही तरतीब के साथ देव धर्म की कल्चर को हाजरीन पर अंकित कर रहा था। लैक्चर के बाद कई जनों ने सरल शब्दों में देव धर्म की कल्चर बताने के और उस पर गर्व करने के लिए मुबारकबाद दी।

29.12.2012

महोत्सव का विशेष दिन

यह दिन पू० भगवान के जन्म का विशेष दिन था। सुबह उठते ही धर्म सम्बन्धियों ने गुरू के जन्म दिन की एक दूसरे को बधाई दी और 6.30 बजे धर्म सम्बन्धी बाहर सेहन में एकत्र होने शुरू हो गए

और भजनों का गान शुरू किया। केसूपुर की पार्टी ने श्रीमान गुरूदेव राज जी के अधीन भजन गाए और बाकी धर्म सम्बन्धियों ने जोश से भरकर उनका साथ दिया। सूर्य उदय के समय पर घण्टा बज उठा और पू० भगवान की जय के साथ सारा वातावरण गूंज उठा। बैंड बाजा बजने लगा, बहुत ही सुन्दर नज़ारा था। इसके बाद जगदीष जी ने सब के साथ मिलकर "प्रगटे देव गुरू भगवान, जीवन ज्योति देने वाले" भजन का भाव विभोर होकर गान किया। फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सब धर्म सम्बन्धियों को इस दिन की विशेषता बताकर मुबारकबाद दी। गुरू महाराज को धन्यवाद दिया, जिन्होंने सब के जीवनों में अनोखा परिवर्तन पैदा किया। फिर सब धर्म सम्बन्धी फूलों के हार लेकर पू० भगवान की छवि के आगे रखने के लिए कतार बद्ध होकर चलने लगे और सब ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

बाहर बैंड बजने लगा, डाक्टर मुनशा सिंह जी और सुखदेव जी लन्डन अपने कई साथियों समेत इस पर्व की खुशी में नाचने लगे, यह सुन्दर नज़ारा बहुत देर तक चलता रहा और बाकी धर्म सम्बन्धी इस नज़ारे की खुशी प्राप्त करते रहे।

विशेष सभा

8.30 बजे इस दिन की पहली वा महा सभा का अयोजन हुआ। इसके सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। श्रीमान जगदीष प्रसाद जी ने बहुत सुन्दर भजन का गान किया। सभापति जी बहुत प्रभावित हो रहे थे। फिर सुन्दर हार द्वारा पू० भगवान की छवि का अर्चन किया गया। देव स्तोत्र के सामूहिक गान के बाद सभापति जी ने भाव विभोर होकर पावन देव स्तोत्र की व्याख़्या की। सब यात्रियों के बैठने के बाद पू० भगवान के श्री चरणों में ज़ोरदार आर्शीवाद प्रार्थना की।

श्रीमान जगदीष प्रसाद जी ने फिर भजन गाया "अद्वितीय जीवन ब्रत धारी, अद्वितीय महिमा है तुम्हारी" इस दौरान वह बेबस कई बार फूट पड़ते थे। निहायत ज़ोरदार मण्डल बन रहा था। फिर माननिय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अपना ब्यान आरम्भ किया: -

नेचर ने अपने अटल नियमों द्वारा गज़ब के परिवर्तन किए हैं। विकास का नियम नेचर की अद्भुत वा अमुल्य देन है। इसको समझना निहायत ज़रूरी है। इस नियम को समझे बिना परम पू० भगवान देवात्मा के जहूर को समझा नहीं जा सकता। विकास के नियम के द्वारा पहले से बेहतर अस्तित्व पैदा होते हैं। घास का विकास होते होते गन्ने की अनेकों बहुमुल्य किसमें बन गई। इससे पहले यह पृथ्वी और गृह और उपगृह कैसे विकसित हुए। हमारा सूरज नबूला से पैदा हुआ, वैसे ही जैसे अब नेचर में और अनेकों सूरजों का विकास क्रम जारी है। पृथ्वी पर जीवन पैदा होने के हालात कितनी लम्बी अवधि के बाद विकसित हुए। जीवन के पैदा होने पर जीवों के विकास का सिलसिला बढ़ता जाता है। जीवों के विकास के क्रम में लाखों सालों के बाद मनुष्य पशुओं की विशेष जाति से विकसित हुआ। फिर मनुष्य जीवन का विकास क्रम सात्विक जीवन धारी और विज्ञानी पैदा करता है। इसी विकास क्रम में देवात्मा का आर्विभाव हुआ। उन्हें नेचर ने देव शक्तियों की अन्दुत देन दी, जो आज तक किसी मनुष्य को प्राप्त नहीं हुई, सारा मानव जगत सत्य और शुभ अनुराग की शक्तियों से खाली है। देवात्मा सारे सच्चे ज्ञान के आशिक हैं और सब प्रकार

के भले के आशिक हैं। यह मनुष्य की कल्पना से भी ऊपर की चीज है, क्योंकि मनुष्यात्मा केवल सुख के आशिक हैं। मनुष्य के सुख के अनुराग से ही दिल्ली के गैंग रेप जैसी घृणित और महा दुखदाई घटनाएं पैदा होती रहती हैं। भाई, भाईयों के कातिल बनते रहते हैं। बड़े बड़े भृष्टाचार होते रहते हैं। बेटे बेटियां माता पिता के हत्यारे बनने के लिए बेबस हो जाते हैं। हमारे गांव की एक औरत अपने पति से दुखी होकर अपने बच्चों समेत कुएं में गिरने जा रही थी।

मनुष्य के विकास की कथा में भक्त पूर्ण सिंह, फादर डैमियन, मिस मेरी कारपैन्टर और महात्मा बुद्ध जैसी हस्तियां पैदा होती रहती हैं। परम पू० भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि मिस मेरी कारपैंटर और महात्मा बुद्ध के जीवन ने भी उनके जीवन ब्रत ग्रहण करने के निश्चय को और दृड़ कर दिया। पू० भगवान ने 20 दिसम्बर 1882 ई० को "सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे, जग के उपकार में ही जीवन यह जावे" जीवन ब्रत ग्रहण किया। नौकरी से अस्तीफा देकर मनुष्य मात्र के भले और मरती रूहों को बचाने के लिए जुट गए, परन्तु मानवता ने अपने परम हितकर्ता का स्वागत नहीं किया, बल्कि सताने में कोई कसर नहीं छोड़ी। देवात्मा का परम लक्ष्य और है, परन्तु हमारे लक्ष्य और हैं। हमारे मनुष्य आत्माओं के लक्ष्य हमारे नीच भाव बनाते हैं। हम अन्धेरे के जीव नहीं जानते कि हम कौन हैं? हमने क्या करना है?

श्री सभापति जी ने शुरू से लेकर अर्थात जीवन ब्रत ग्रहण करने से लेकर, जो घोर विरोधता में से, दुखों में से, मुकदमों मे से, जानकंदनी में से परम पू० भगवान को गुजरना पड़ा, घोर निराशाओं में से निकलना पड़ा, उसका बहुत हृदय-स्पर्षिय ब्यान किया। सभापति जी समेत कई हृदय फूट पड़ते रहे। बड़े बड़े इकट्ठों द्वारा समान तोड़ना, किताबें फाड़ना, प्रचारकों, सेवकों को ज़ख़्मी करना, मुकदमों में फंसाना आदि द्वारा विरोधता के तुफान खड़े किए गए। दो अख़बारों के एडीटरों, एक सिक्ख वकील ने 8 मुकदमें किए जो पांच साल तक चलते रहे। फतह देवात्मा की हुई। उस वकील का सब कुछ बिक गया। फिर धर्मपाल (अब्दुल गफूर) देव रतन ने मुकदमों के द्वारा सताया, गिरधर राय, झांगी राम, देवात्मा के अपने बेटों ने मुकदमों के द्वारा अथाह दुख पहुंचाए। पू० भगवान ने सदा सचाई और भलाई का साथ दिया। अपनी जान की, सेहित की परवाह नहीं की। अपने मिशन के लिए जो भी त्याग करने ज़रूरी थे, वह त्याग किए। सब अद्वितीय त्यागों वा तपों में से गुजरे जिसकी मिशन मांग करता था। ऐसे देव भावों से ही अद्वितीय देव ज्योति वा तेज का विकास हुआ, जिसके द्वारा मानवता के भले का सच्चा राह सदा के लिए खुल गया और देवात्मा को देव जीवन प्राप्त हुआ जो कि मनुष्य मात्र के लिए सबसे बढ़कर अध्ययन की चीज़ है।

Dev Jiwan is a thing of study

यह सभा बहुत ज़ोरदार थी। बार बार हृदय झुक रहे थे, गुरू के रूप पर बलिहार हो रहे थे।

फिर सभापति जी ने जन और धन की अपील देवात्मा के विलाप नामी लेख से पढ़कर सुनाई।

दो जनों ने शराब से बचने का प्रण किया। कल्याण सत्संग के लिए निम्नलिखित जनों ने नाम लिखवाए:- श्री सुनील दत्त जी, श्रीमती कमलेश जी, डा० सतिन्द्र ढिल्लों, बीबी वीरपाल कौर जी, श्रीमान रजिन्दर जी देहरादून, श्रीमान जलधर जी चण्डीगढ, सुभाषजी अग्रवाल साहिब, श्री प्रेम कुमार जी बन्नी,

श्रीमान जीत सिंह जी मल्लेका, श्रीमान सुन्दर लाल जी मल्लेका, श्रीमान वर्मा जी यमुना नगर, मधू सूदन जी चण्डीगढ़, श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना, डा० मुन्शा सिंह जी पदमपुर आदि आदि।

दान के रूप में एक लाख 60 हजार से ऊपर, जिसमें 1 लाख श्रीमान बलदेव सिंह जी के परिवार की ओर से 25,000 खेड़ा साहिब कीओरसे प्राप्त हुए।

बच्चों की सभा दुपहिर 2 बजे

2 बजे दुपहिर बच्चों की सभा का आयोजन किया गया। 12 साल से कम उमर के बच्चों ने बहुत आत्म विश्वास के साथ भजन और गुरू महाराज की जीवन कथाएं सुनाई। सब बच्चों को ईनाम वितरण किए गए।

बच्चों की सभा के बाद खेड़ा इन्सटीच्यूट के बच्चों ने भजन और कवाली पेश की। बच्चों ने जिस तैय्यारी से यह प्रोग्राम दिया, उसकी सब ने प्रशंसा की। दत्त साहिब ने अपनी पार्टी के साथ यह सारा प्रोग्राम तैय्यार करवाया हर साल डाक्टर विनोद जी खेड़ा इन भजनों की तैय्यारी में हजारों रू० खर्च करते हैं, स्वंय पूरी दिलचस्पी से यह तैय्यारी करवाते हैं। देव धर्म का प्रबन्ध इसके लिए उनका धन्यवादी है। भजनों से प्रभावित होकर बहुत लोगों ने ईनाम के तौर पर रू० बच्चों को दिए। खेड़ा साहिब ने श्रीमान बलदेव सिंह जी के हाथों से ईनाम दिलवाए। सारा प्रोग्राम बहुत अच्छा रहा।

29.12.2012, शाम 4.00 बजे

पबलिक लैक्चर

वक्ता: डाक्टर विनोद चन्द्र जी खेड़ा

विषय: सच्चा सुख, शान्ति और सफलता, एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण इस लैक्चर के सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थे, जिन्होंने बहुत सुन्दर शब्दों में वक्ता का परिचय करवाया। उनके विशेष जीवन पर रोशनी डाली, उनकी योग्यताओं की सराहना की। उसके बाद वक्ता ने अपना ब्यान आरम्भ किया: -

आज के इस नारकीय युग में हर व्यक्ति इस विषय के बारे में यही कहेगा कि सच्चा सुख और शांति किस जमाने की बातें हैं। वक्ता ने उन दुखों का वर्णन किया कि जिनमें से मानवता वर्तमान काल में गुज़र रही है। एक अकेली दिल्ली की दिल दहलाने वाली घटना ही नहीं अपितु सभी अखबार तथा टीवी चैनल ऐसी दुखदायी घटनाओं से रोज़ भरे रहते हैं। वक्ता ने प्रश्न किया कि ऐसी घटनाओं से हम क्या सबक लेते हैं। सिक्खों के गुरू नानक देव जी ने भी कहा था 'नानक दुखिया सब संसार'। वक्ता ने कहा कि हम एक सुहावना वैज्ञानिक सफर कर के यह विश्लेषण करेगें कि इन सब दुखों और मुसीबतों से मानवता किस प्रकार छुटकारा पा कर सच्चे सुखों का आनन्द भोगने योग्य हो सकती है।

हमारा सम्पूर्ण विश्व जड़ और शक्ति से बना हुआ है। वक्ता ने श्रोतागणों से पूछा कि हमारे अस्तित्व में कौन सा भाग जड़ है और कौन सा शक्ति और उन्होंने बताया कि हमारे अस्तित्व में मुख्य और सार भाग हमारा आत्मा है जो जीवित शक्तिमय है तथा हमारा शरीर एवं दिमाग जड़ एवं निर्जीव शक्ति सम्पन्न है। उन्होंने एक वैज्ञानिक अनुसंधान की ओर संकेत करते हुए ये बताया कि जब कोई मनुष्य निराशा की अवस्था से आशा एवं खुशी की ओर परिवर्तित होता है तो उसमें 1400 प्रकार के Bio chemical परिवर्तन आते हैं। सारे दिन में हमारे शरीर में इस प्रकार के

कितने परिवर्तन आएगें, उसका अनुमान लगाना भी मुश्किल है। अच्छी भाव शक्तियाँ हमारे शरीर तथा आत्मा में अच्छा परिवर्तन पैदा करके उसका पुर्ननिर्माण करती हैं। इसके विपरीत हमारी बुरी भाव शक्तियाँ विनाश का काम करती हैं। उन्होंने बताया कि आधुनिकतम अनुंसधान के मुताबिक Atom के छोटे - 2 कण अर्थात Electron, Protron और Neutron आपस में हर क्षण शक्ति का आदान प्रदान करते हैं जैसे कि वे Basket बाल खेल रहें हों। उन्होंने हमारे वातावरण में अदृश्य शक्तियों से बने हुए Field का जिक्र किया जो हमारे चारों तरफ इर्द - गिर्द हमें घेरे हुए है। Eienstein ने कहा है कि "The field is the soul governing agency of the particle" जिससे कि ये साफ हो जाता है कि हमारे इर्द - गिर्द के वातावरण में जिस प्रकार के field बने हुए हैं उसी प्रकार का परिवर्तन हम में आता है। हमारा वातावरण भी शक्तियों से भरपूर है जिनके अपने अपने electro megnatic field हैं।

परम पूजनीय भगवान देव आत्मा ने एक शताब्दी से भी पहले इस विषय पर पूर्णत: सत्य पर आधारित अनुंसधान करने के पश्चात मानवता को आत्मा के विषय में सत्य ज्ञान दिया। उन्होंने बताया कि मनुष्य की आत्मा में उसकी भाव शक्तियाँ ही उसकी हर सोच विचार व क्रियाएं कराने वाली हैं। मनुष्य की भाव शक्तियाँ मुख्यत: दो प्रकार की हैं यथा नीच व उच्च। मनुष्य सुखों का गुलाम है और मुख्यत: इन्हीं नीच सुखों की तृप्ति के लिए कोई भी पाप करने के लिए अपने आप को मज़बूर पाता है। उन्होंने कहा अहम या 'मैं' की गुलामी मनुष्य के लिए उसका सबसे बड़ा शत्रु प्रमाणित हो रही है। इसके चार बच्चों अर्थात घमण्ड, स्वार्थ, मनमर्जी तथा नीच घृणा का संक्षिप्त वर्णन किया तथा उसके नुकसानों की भी संक्षिप्त व्याख्या की। इसके अतिरिक्त उन्होंने मनुष्यों की अन्य नीच भाव शक्तियों की गुलामी के विषय में भी चर्चा की जैसे धन संपति का अनुचित मोह, संतान से अनुचित मोह आलस्य स्वाद वासना तथा नशे इत्यादि की गुलामी जो सब हमें क्षणिक सुख तो देते हैं परन्तु अंत में दुखों का कारण बनते हैं।

श्रीमान Dr. Vinod Khera ने बताया कि हमारी हर चिंता तथा हमारी हर क्रिया हमारी मंजिल का फैसला करती है कि क्या हमें स्थायी सुख, शांति एवं सफलता मिलेगी अथवा नहीं। हवाई जहाज़ के एक पायलट का भी जहाज उड़ाने से पहले अपना लक्ष्य तय करना पड़ता है कि उसे कहाँ पहुँचना है जबकि मनुष्य अपने जीवन में ऐसा नहीं करते।

एक शिक्षिका Mrs. Thomson तथा उनके एक शिष्य Teddy की कहानी सुना कर उन्होंनें सभी श्रोताओं को भाव - विभोर कर दिया जिनमें से अधिकतर उस कहानी को सुन कर रो रहे थे यह कहानी एक शिक्षिका की अपने एक विद्यार्थी के प्रति दया एवं सहानुभूति के उच्च भाव द्वारा अपने विद्यार्थी के जीवन में लाई गई उच्च क्रांति एवं सुख को दर्शाने में सक्षम थी। यह कहानी यह भी दर्शाती थी कि उच्च भावों के द्वारा उच्च भावधारी न केवल स्वयं के लिए सच्चा सुख प्राप्त करता है अपितु औरों के जीवन को भी सुखी एवं सार्थक बनाने में प्रभावी ढंग से सार्थक होता है।

मधुमाक्खियों का उदाहरण देते हुए वक्ता ने बताया कि हम मनुष्य मधुमक्खियों की तरह एक बोतल में फंस कर अपनी सारी जिंदगी इधर उधर नीच

भावों के अधीन हो कर टक्करें मारकर अपना जीवन दुखों का घर बनाने में लगे रहते हैं। उन्होंने श्रोताओं से पूछा कि क्या मनुष्य अपनी नीच शक्तियों से आज़ादी पाने में सक्षम है? यदि ऐसा संभव होता तो आज मानव समाज नरक के रूप में न ढ़ल गया होता तथा सिक्खों के गुरू नानक को ऐसा नहीं कहना पड़ता कि 'नानक दुखिया सब संसार'।

एक अचार का खाली मर्तबान ले कर वक्ता ने एक Practial Demonstration दी जिसके द्वारा ये समझाने का प्रयास किया कि किस प्रकार हमारा आत्मा प्रमुख है और बाकी जो कुछ हम सब करते फिरते हैं वह सब गौण। इस आत्मा की रक्षा के लिए हमारा संबध परम पूजनीय भगवान देवआत्मा के साथ स्थापित होना आवश्यक है। वक्ता ने राजस्थान के डाक्टर मुंशा सिंह जी ग्रोवर को मंच पर आमंत्रित किया और उनसे प्रार्थना की, कि वे इस विषय में अपने तजुर्बे के बारे में बताएं। डा० मुंशा सिंह जी ने बहुत संक्षिप्त रूप में बताया कि किस प्रकार वो हिन्दुओं सिक्खों और बुद्ध धर्म के भिन्न-2, बड़े और छोटे मतों में सारी आयु गुज़ार कर तथा अपनी आयु व आय का एक बेहतरीन हिस्सा व्यय करके, विशेषकर धन अनुराग और काम सुख अनुराग से पीड़ित हो कर दुखों का घर बन चुके थे। उन्होंने अपने उपकारियों और मित्रों के साथ धन संबन्धी ठगी करने में भी कोई कमी नहीं छोड़ रखी थी। उनके जीवन में किस प्रकार परम पूजनीय भवान देवात्मा के अद्धितीय देव प्रभावों के करामातों की अनोखी लीला आरंभ हो गई और वे अपने पापों के लिए सच्चा परिशोध करके सच्चा सुख और शाति प्राप्त करने के योग्य बन गए।

श्रीमान डा० विनोद खेड़ा ने अपनी श्रद्धेय दादी जी के पिता श्रद्धेय श्रीमान चंदु लाल जी पटवारी के जीवन में आए उच्च परिवर्तन का भी संक्षिप्त वर्णन किया कि किस प्रकार वे अपनी रिश्वत और बेईमानी की कमाई को छोड़ कर ईमानदार बने और उन्होने कैसे कपास बेल-2 कर अपने परिवार का गुज़ारा किया। रिश्वत की गंदी कमाई को वे किस प्रकार लोगों का खून पीने समान समझने लग गए और उनकी सेवा से न केवल खुद सुख कमाया अपितु किसानों की जिन्दगी भी खुशहाल बनाने में सफल रहे। उन्होंने कपास बेल-2 कर अपने परिवार का गुज़ारा किया और दिवाली के अवसर पर रिश्वत के रूप में आई मिठाईयों को त्याग कर मेरी दादी जी एवं अपने परिवार के अन्य सदस्यों की गुड़ खिला कर दिवाली मनाई। इस प्रकार परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने हजारों जीवनों में अनोखा उच्च परिवर्तन पैदा करके उनके जीवन में स्थाई सुख, शांति और सफलता लाने का आश्चर्यजनक काम किया है। हम में से जिसे भी ये चीजें चाहिए उन्हें भगवान देवात्मा के साथ अपना संबन्ध बनाने की अतिशय आवश्यकता है।

अंत में वक्ता ने परम पूजनीय भगवान देवात्मा की घोषणा से श्रोतागणों को परिचित करवाया जिसमें परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने कहा है कि-

"मैं इस पृथ्वी में स्वर्ग चाहता हूँ। मैं इस पृथ्वी में वह दीन वा धर्म लाना चाहता हूँ कि जो इस दुनिया में सब प्रकार के पापों और बुराईयों का नाश करता हो, जो इसी दुनिया में ऐसे सच्चे और भरोसे के योग्य संबन्धी उत्पन्न करता हो कि जिनके उत्पन्न होने से मनुष्य जीवन सब प्रकार से मीठा और सुखप्रद

बन सकता है।"

30.12.2012 पहली सभा सुबह 8.30 बजे

सभापति: श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय : नये सेवक सेविकाओं का ग्रहण

सब से पहले श्रीमान सुनील दत्तजी ने बहुत ऊंचे वा सुन्दर स्वर में महिमा सम्बन्धी भजन का गान किया। फिर सबने खड़े होकर सुन्दर फूलों के हार से छवि द्वारा परम पू० भगवान देवात्मा का अर्चन किया, इसके बाद अद्वितीय देव स्तोत्र का समूह गान किया, सदा की तरह सभापति जी ने श्रद्धा भाव से भरकर देव स्तोत्र की व्याख्या की। फिर सभा का विषय बताकर सभापति जी गुरू के दरबार में सहाय प्रार्थना की और हाजरीन का सहयोग मांगा। सेवक बनने वालों की रक्षा और भलाई के लिए प्रार्थना की।

इसके पश्चात "करें हम बेनती सारे, जीवन का द्वार खुल जावे, सेवक बनने का इन सब को महा अधिकार मिल जावे" नामक भजन जगदीष प्रसाद जी वा दत्त जी ने भाव पूर्ण होकर गाया। इसके बाद सेवक बनने वाले जनों को बारी बारी से खड़े करके उनका परिचय करवाया गया। नये सेवकों के जीवन परिवर्तन के विषय में बताया गया, उनके माता पिता के विषय में भी बताया गया, बड़ा सुन्दर नज़ारा था।

फिर श्री सभापति जी ने बड़े सुन्दर ढंग से नीचे लिखे जनों को प्रतिज्ञाएं करवाई।

नये बने सेवक:-

1) कुमारी पूजा महारा, पुत्री श्रीमान चमन लाल जी (नेपाल)

2) श्री सिद्धार्थ जी महारा, पुत्र श्रीमान चमन लाल जी (नेपाल)

3) श्री राहुल जी, पुत्र श्रीमान जलधर जी।

4) श्रीमान लखविन्द्र सिंह जी, भानजा श्रीमान जीत सिंह जी मल्लेका

5) श्रीमान गौतम जी, पुत्र श्रीमान सुखदेव सिंह, पौत्र हैड मास्टर हरबंस सिंह जी।

एक पुराने इंजनियर सेवक बहाल हुए।

सभापति जी बड़े अच्छे ढंग से समझा समझाकर प्रतिज्ञाएं करवा रहे थे। साथ ही पहले सेवकों से पूछ पूछकर उन प्रतिज्ञाओं का एहसास करवा रहे थे। प्रतिज्ञाएं होने के बाद सबको सेवकी में ग्रहण करके उन्हें मुबारकबाद दी। फिर सब सेवकों को समाज की ओर से फूल मालाएं पहनाई गई। बहुत सारे धर्म सम्बन्धियों, स्नेही जनों ने भी फूल मालाएं पहनाई, इस खुशी में कई धर्म सम्बन्धियों ने दान भी दिया। यह सारा वातावरण बहुत सुन्दर था।

भाव प्रकाश

सेवकों के ग्रहण के तुरन्त बाद भाव प्रकाश की सभा की गई। बहुत सारे यात्री चले भी गए थे तो भी 125-150 के करीब यात्री थे, उनमें से कुछ ने भाव प्रकाश किया। इस सभा के सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे।

श्री हुशियार सिंह जी:- मैं नशे पीता था। 13 साल से दवाईयां खा रहा हूं। मेरे पिता जी मुझ से दुखी होकर समय से पहले ही परलोक सिधार गए। मैंने पिता जी को बहुत सताया है, मेरे जैसा नीच, दुष्ट, घटिया इन्सान कोई नहीं हो सकता। मैंने पिता जी की कोई सेवा नहीं की, उल्टा पिता जी बज़ुरग होकर मेरी सेवा करते रहे। मैं दवाई लेने के लिए अमृतसर जा रहा था, रास्ते में मेरा सांस घुटने लगा, एक मेहरबान ने मेरे

ऊपर तरस खाया, मुझे जलन्धर हस्पताल में दाख़िल करवा दिया। मैं बच गया। नशेड़ी का नशा छूटना बहुत ही मुश्किल है (दुखी होकर रोते हुए) मुझे शूगर की भी बिमारी है। जिस - 2 ने मेरा ज्यादा हित किया, उसी उसी को मैंने ज्यादा सताया माता पिता को बहुत दुखी किया है, उनके उपकारों का यही बदला दिया है। बहुत दुखी हूं। आगे से नशे छोड़ते छोड़ते मर जाना चाहता हूं। नशे पीकर मरना नहीं चाहता।

श्रीमान सुखदेव सिंह जी (लंडन से) : इस दर से जुड़कर मेरा जो लाभ हुआ है, उसका ब्यान करना मुश्किल है। इस महोत्सव का लाभ बताना ही कठिन है। जो प्रभाव यहां से मिले हैं, उनसे मेरा बहुत भला हुआ है। वह उच्च हस्तियां जो गुरू मिशन के लिए कुर्बान हो गई, उनकी कुर्बानी (भरे दिल से) हृदय को बार बार उनके आगे झुकाती हैं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज, श्रद्धेया जी और गुरू महाराज को सामने लाने से ही, उनकी महिमा किसी अंश महसूस होती है। श्रद्धेय श्रीमान जमीयत सिंह जी की महानता नज़र आई है कि उन्होंने किस प्रकार गुरू महाराज की जमानत दी, उनके उपकारों को सामने लाकर 20 मिन्ट तक रोता रहा। उपकारियों का उपकारी रूप नज़र आ रहा था। उन सब महान हस्तियों के उपकार, जिन्होंने इस मिशन के लिए कुर्बानियां देकर सेवा की, नज़र आकर उनके आगे झुका रहे थे। हम उनके आगे अधिक से अधिक झुक सकें। यहां आकर मेरा एक वहम दूर हो गया। घंमड का ख़ौफ़नाक रूप नज़र आया। देव रतन जैसे योग्य जन की गिरावट को सुनकर हृदय कांप गया। मैं घमंड में आकर कहता था कि मुझे समाज से कोई दूर नहीं कर सकता। यह मेरे घमंड की बोली थी। मेरी जो श्रद्धा गुरू महाराज के प्रति है वह पार्शल है। देव शास्त्र की निसबत "मुझ में देव जीवन के विकास" वा अद्वितीय त्याग मुझे बेहद महान लगते हैं। इन सभाओं में आकर महसूस हुआ है कि मैं जो सोच लेता हूं, उस पर अड़ जाता हूं, अर्थात मैं ठीक हूं, दूसरे ग़ल्त हैं, यह अवस्था बन जाती है। अब दिल में आता है कि अपनी तुच्छता के साथ इस मिशन में सेवाकारी बनने की try करना चाहता हूं। जंगल में लगी आग बुझाने की कोशिश करने वाली चिड़िया की तरह कोशिश करने की इच्छा है। हमें शर्म आनी चाहिए कि हमारे मिशन की टी.वी. पर अभी तक कोई चर्चा नहीं। इसके लिए संग्राम करना है। मेरे एक मित्र ने इसमें मेरी सहायता करने का वायदा किया है। हमें गुरू मिशन की ज़रूरत है, हम उसके मोहताज हैं गुरू महाराज को हमारी ज़रूरत नहीं, मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि अपनी योग्यतानुसार इस मिशन में पूरा पूरा योग दान दूंगा।

श्रद्धेय जी की महानता, उनकी कुर्बानी रूला देती है। उन्होंने मिशन के लिए अपने कपड़े बेच दिए, कई दिनों की सूखी रोटी के टुकडे खाए। बेहद लांछन और आघात खाए और असमय मृत्यु को प्राप्त हो गई। महाराज का भी अपनी शारीरिक जरूरतों का भी प्रयाप्त प्रबन्ध नहीं होता था। जिस शरीर में देव जीवन वास करता था, उसके साथ यह कितना बड़ा जुल्म! काश! मैं रू० कमाना अपना लक्ष्य न बनाऊं। यदि यह गुरू मिशन से दूर करे तो इसको छोड़ सकूं। अधिक से अधिक इस मिशन में सेवाकारी होकर अपना भला कर सकूं। इस मिशन के साथ जुड़कर we are always a gainer हम देव जीवन से जुड़ सकें। कृपा करके मेरे

लिए प्रार्थना करो कि मैं अधिक से अधिक गुरू के निकट हो सकूं।

बीबी एकता जी: - मेरा हृदय अपने दादा, दादी, पापा जी और अपनी भुआ को देखकर झुक जाता है। वह बहुत नम्र और दीन होकर जीवन गुजार रही हैं। पापा के दिल में जो होता है, वैसे ही वह बाहर से हैं। (रोते हुए) education के साथ आदमी घंमडी हो जाते हैं, पागल होकर मिशन से दूर हो जाते हैं, पर यह नहीं हुए। काश! मैं भी ऐसा कर सकूं।

श्रीमान प्रिंसीपल सरताज सिंह जी: - खेड़ा साहिब का लैक्चर सुनने के लिए मैं यहां आता हूं। मैंने उनके श्रद्धेय पिता जी की जीवनी पढ़ी। मेरे ऊपर बहुत सुन्दर प्रभाव पड़े। उनकी ईमानदारी ने मुझे हिला दिया। वह कालिज के अख़बारों की रद्दी भी प्रयोग में नहीं लाते थे। एक बार उन्हें माल गाड़ी में लिफ्ट लेनी पड़ी, उन्होंने टिकट लेकर फाड़ दी, मुफ्त सफर नहीं किया। ईमानदारी का नायाब नमूना मैंने कभी नहीं देखा।

अपना पुराना टिकाना छोड़कर जब हम केसूपुरा आए तो हम बहुत तंगी में थे। कच्ची दिवारों का हमारा घर था। दुकानदार ने दो दिन के लिए उध ार चीनी नहीं दी थी। अब मेरे स्कूल की 70 लाख सलाना की Turnover है। साईकल ही मेरी बड़ी सवारी थी।

इस वर्ष मेरा बच्चा बच्चों की सभा में बोलने के लिए बेकरार था, मेरी पत्नी बिमार होकर भी बच्चों को लेकर आई, वैसे उनका आने का विचार नहीं था। मैं अपनी पत्नी के प्रति धन्यवादी हूं। उनके माता पिता और खानदान को भी धन्यवाद देता हूं। श्रद्धेय कनल जी की एक जच्चा के दान मांगने के जज़बे को पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। श्रीमान जीत सिंह जी हमारे प्रेरणा स्त्रोत हैं। उनके छोटे भाई सुखदेव जी का भी मैं शुक्रगुज़ार हूं, उन्होंने मुझे निराले गुरू के साथ जोड़ा है। घमंड से छुटकारा पाना बहुत बड़ा सौभाग्य है, यह हम जाटों के भीतर तो गले तक भरा होता है। इससे बचना बहुत मुश्किल है।

उनके ब्यान के बाद सुखदेव जी लंडन ने खड़े होकर कहा कि सिरताज जी ने बहुत मेहनत की है। सर्दी की रातों में 3 बजे सुबह उठकर बच्चों को पढ़ाने जाते थे। यह बहुत अच्छा चरित्र रखते हैं, बड़ी आला फितरत के मालिक हैं, शानदान टीचर हैं, मेरे लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं।

चमन जी मैं पक्का मास खाने वाला जीव था, मुझे बचाया गया है। मेरे दोनों बच्चे सेवक बने हैं, इसकी हमें बहुत खुशी है। यह सब खेड़ा साहिब और उनकी माता जी की कृपा है। उन्होंने कभी मुझको नौकर नहीं समझा। खुद अपने साथ मुझे बिठाते। मेरा सब कुछ उन्होंने ही किया है। मैं पागल ने एकता को चोरी अण्डा खिला दिया। उस समय मुझे कोई पता नहीं था कि मैं ग़ल्त कर रहा हूं। इस बात पर भी खेड़ा साहिब ने मुझे बार बार नहीं डांटा। मैंने ऐसा घटिया काम किया, अब मुझे इसका बहुत दुख है। मेरे पास जो कुछ भी है, सब इनकी कृपा है।

अनिल जी पदमपुर : - मेरी शादी हो चुकी थी, मेरे छोटे भाई की भी शादी हो चुकी थी। मेरी माता ने कोई चीज़ मेरे भाई की पत्नी को दे दी और मेरी पत्नी को नहीं दी। मैं अन्धा हो गया, मां को डांटा, टोका और अपमान किया मां को रुलाया, उस मां को

जिसने मेरी आंखें खराब होने पर यह कहा था कि मेरी आंखें चाहे खराब हो जाएं, पर तेरी आखें ठीक हो जाएं। मैंने इस दर पर आकर उनको कुछ सन्मान दिया है, हार पहनाया है, चरणों मे सिर रखकर प्रणाम किया है, अभी भी जितनी सेवा करनी चाहिए थी, वह नहीं कर सका। समझता यही रहा कि मैं सेवा कर रहा हूं। जिस तरह का व्यवहार मैंने मां को दिया है, उसका दुख हो रहा है, यही दर केवल बचाने वाला है।

श्रीमान जलधर जी: - मुझे समाज से जोड़ने के लिए खेड़ा साहिब की माता जी ने बहुत संग्राम किया है। वह सभा में आने के लिए ज़बरदस्ती मुझे आटो के पैसे दे देती थी। मैं मौका मिलने पर रिश्वत खोर बन गया था। इस दर पर आकर मेरी रक्षा हेा गई। आज जो मेरे पास मेरा अपना मकान है, अच्छे हालात हैं, इसमें उनकी कृपा का हाथ है। आज मेरा बेटा सेवक बना है, इसकी बेहद खुशी है। मेरी धर्म पत्नी को समाज का कुछ पता नहीं, उन्होंने 100 रू० आते हुए इस खुशी में दिए।

सुभाष जी: - मेरे पिता जी के बाद 20 वर्ष तक श्रीमान जी हमारा बहुत ख़्याल रखते रहे, बचाते रहे। मेरी माता जी एक देवी थी। शुरू से ही कर्मचारियों की हमारे घर पर कृपा रही है। श्री बख़्शी जी ने मुझे मरते हुए को बचाया था। श्री धर्मवीर जी ने हमारे परिवार को ऊपर उठाने के लिए बहुत कृपा की है, उन सब को प्रणाम करता हूं। और धन्यवाद देता हूं। सब सेवकों को प्रार्थना है कि वह अपने बच्चों को इस दर से जोड़ें।

प्यारा सिंह गंगानगर: - मैं 6 महीनों तक शराब, मास, अण्डा वा कोई भी नशा नहीं करूंगा। कल्याण सत्संग पर आऊंगा।

सभापति जी ने सबको नशा छोड़ने वा कल्याण सत्संग पर पहुंचने की अपील की। दर्जनों जनों ने आने का वायदा किया।

श्रीमान जगजीत सिंह जी: - विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान जी सत्यदेव की जय।

श्रीमान जी इस बार महोत्सव पर यह देखकर बहुत खुशी हुई कि 18 डी की अपेक्षा बाह्मण धर्मशाला ठीक है, किसी तरह की कोई परेशानी नहीं हुई, खाने का, रहने का, किसी तरह की कमी नहीं थी। सभाओं से बहुत लाभ उठाया, ये महसूस हुआ कि मुझे जीवन में अभी काफी परिवर्तन लाने की जरूरत हूं, जो कि गुरू महाराज के और निकट होकर सम्भव है। कुछ बातें जो मुख्य रूप से समझ में आयी कि, हमें आत्मज्ञान पाकर वा मिथ्या, नीच अनुरागों से मोक्ष पाकर परोपकार की और ध्यान देने की जरूरत है। विकास और परोपकार ही जीवन का मुक्ष्य लक्ष्य होना चाहिए बाकी सब कुछ तो गौण ही है।

श्रीमान जी बेशक दुनियां में बहुत से कहे जाने वाले अनेकों धर्म और मत हैं, लेकिन एक देव धर्म ही वैज्ञानिक है जिसके संस्थापक भगवान देवात्मा है, जिन्होंने वह बताया कि हम सब सम्बन्धों की उपज हैं हम सम्बन्धों में ही रहकर अपना बेहतर जीवन व्यतीत कर सकते हैं। लेकिन हम स्वार्थी और आलस्य परायण केवल लेना चाहते हैं, किसी के काम नहीं आना चाहते हैं अनेकों वैज्ञानिकों और दर्शनिकों ने जीवन को बेहतर सुखमय, शान्ति और समृद्धय बनाने की विधियों पर प्रकाश डाला है लेकिन मनुष्य कभी किसी को याद करना या धन्यवाद देना नहीं चाहता।

श्रीमान जी एक बात इस बार और सामने आई कि आपने श्रीमान जीत सिंह जी को सम्बोधित करते हुए बताई कि सेवक और अच्छा सेवक किसे कहते हैं, इस बात से भी कुछ प्रेरणा मिली कि मुझे भी आगे बढना चाहिए एक अच्छे सेवक की खूबियों को ग्रहण करना चाहिए, कथनी और करनी एक होनी चाहिए।

श्रीमान जी आप की सेवा में एक और बात भी कहना चाहूंगा कि आप, श्रीमान खेड़ा जी, श्रीमान बलबहादुर सिहं जी व अन्य सभी प्रशंसा के पात्र हैं कि सेवा करने की ओर ही ध्यान है किसी पद और मान मर्तबे की कोई इच्छा नहीं है, निस्वार्थ भाव से सेवा का आप सब का स्वभाव है इसलिए मैं आपको बार-बार धन्यवाद देता हूं और दिलकी गहराइयों से ये कामना करता हूं कि **आप जिएं हजारों साल, साल के दिन हो पचास हजार**। नया वर्ष 2013 आप सब के लिए मंगलमय हो, कल्याणकारी हो और आपकी संगत में रहकर मैं अपना अत्मिक हित लाभ कर सकूं।

बहुत बहुत धन्यवाद के भाव से

आपका - जगजीत सिंह

लुधियाना (पंजाब)

सभा समाप्त होने पर सभापति जी ने धर्म शाला प्रबन्ध का खाना बनाने वाले जनों का, यात्रियों का, भजन गाने वालों का धन्यवाद किया।

आख़िर में परम पू० भगवान देवात्मा की अपार कृपा के लिए हृदय झुकाया, जिनकी कृपा द्वारा महोत्सव निर्विघ्न और कुशलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। सहायकारी शक्तियों को भी धन्यवाद दिया। फिर सबने खड़े होकर जोश से भरकर देव आरती का गान करके परम पू० भगवान की चार बार जय ध्वनि की। इसके साथ ही यह पावन पर्व समाप्त हो गया। सेवाकारी सारे सामान को wind up करने लगे।

शोक समाचार

1) बहुत शोक कि समाज के बहुत ही पुराने और वरिष्ट सेवक श्रीमान सतिन्द्र नाथ जी बाली का 7 जुलाई 2012 को निधन हो गया।

- - - - -

2) देव समाज की सक्रिय और योग्य सेविका श्रीमती रीटा बिचानी जी का बम्बई में दुखप्रद देहान्त हो गया।

- - - - -

3) शोक कि श्रीमती स्वदेश शर्मा जी का लम्बी बिमारी के बाद 23 जनवरी को प्रात: गुड़गांव में अपने ग्रह में देहान्त हो गया, वह एक एक बार समाज के ऊंचे पदों पर आसीन रही हैं।

- - - - -

-मन्त्री

Published on 5th of the month
20
फरवरी – 2013
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

तालिका सन 2013 ई०

1	माता पिता सन्तान के सम्बन्ध में	30 जनवरी बुधवार
2	भाई बहनों के सम्बन्ध में	14 फरवरी वीरवार
3	देव समाज के सम्बन्ध में	6, 7 मार्च बुधवार, वीरवार
4	पति पत्नी के सम्बन्ध में	27 मार्च बुधवार
5	उदभिद जगत के सम्बन्ध में	11 अप्रैल वीरवार
6	भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में	26 अप्रैल शुक्रवार
7	वंशीय जनों के सम्बन्ध में	23 मार्च वीरवार
8	स्वदेश के सम्बन्ध में	20 जून वीरवार
9	साथी सेवकों के सम्बन्ध में	21, 22 जुलाई रविवार, सोमवार
10	स्वास्तित्व के सम्बन्ध में	20, 21 अगस्त मंगलवार, बुधवार
11	पशु जगत के सम्बन्ध में	13 सितम्बर शुक्रवार
12	परलोक के सम्बन्ध में	4 अक्तूबर शुक्रवार
13	स्वजाति के सम्बन्ध में	14 अक्तूबर सोमवार
14	भौतिक जगत के सम्बन्ध में	3 नवम्बर रविवार
15	मनुष्य मात्र के सम्बनध में	17 नवम्बर रविवार
16	परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में	16, 17, 18, 19 दिसम्बर सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वीरवार

18 दिसम्बर बुधवार, विशेष दिन

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts